ISSN: 0973-0583

बिहार प्रदेश का नामकरण बुद्ध और बौद्धधर्म की देन''-एक अध्ययन

डॉ० नरेश कुमार

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, हरिराम कॉलेज, मैरवा, सीवान

शोध सार

प्राचीन काल में बिहार मूलत: 'मगध' कहलाता था। इसकी पहली राजधानी राजगृह थी। बाद में पाटलिपुत्र राजधानी बनी। राजगृह जहाँ तीन ओर से पहाड़ियों से घिरी थी तो पाटलिपुत्र तीन ओर नदियों से। इनके कारण मगध की दोनों राजधानियाँ सुरक्षित व सुदृढ़ थीं। यही कारण है कि प्राचीन काल में यह प्रदेश विशाल सम्राज्य के रूप में प्रतिष्ठित हो सका। गौतम बुद्ध के समय (छठी शताब्दी ई० पूर्व) मगध जनपद राज्य में राजगृह, बोधगया, नालंदा, बिहारशरीफ, पाटलिपुत्र और आस-पास के क्षेत्र शामिल थें। लेकिन कालांतर में अनेक जनपद राज्य सहित वैशाली गणतंत्र भी मगध का अंश बन गया। चूँकि मगध क्षेत्राधीन ही गौतम बुद्ध को ऊरूबेला (बोधगया) में ज्ञान प्राप्त हुई थी, इसलिए मगध क्षेत्र बुद्ध को बहुत प्रिय था। उनके कुछ प्रिय शिष्य भी इन्हीं क्षेत्रों से आते थे। बुद्ध और उनके शिष्यों के प्रभावों के कारण यहाँ बड़ी संख्या में बौद्ध-विहार बनने लगे थे। बौद्धधर्म की वजह से ''बौद्ध- विहार'' बनने का क्रम लम्बा चलता रहा। बौद्ध विहारों की बहुलता के कारण कालांतर में मगध और इसके आस-पास के क्षेत्र को ''विहार'' नाम से जाना जाने लगा। यहीं विहार शब्द बाद में अपभ्रंश होकर ''बिहार'' हो गया। यहाँ प्राचीन बौद्ध विहारों और इनके कारण बिहार प्रदेश के नामकरण पर प्रकाश डाला गया है।

शब्द कुंजी :- बुद्ध, मगध, बिहार, नामकरण,बौद्ध-विहार

परिचय :

छठी शताब्दी ई० पूर्व का भारतीय इतिहास में विशेष महत्व है।[1] इस काल में अनेक घटनाएँ घटी, जो प्राचीन इतिहास में दर्ज है। इसी अवधि में आर्रंभिक राज्यों (जनपदों) का उदय हुआ। इसी समय मगध जनपद का उत्कर्ष हुआ। समाजिक-आर्थिक जीवन में बदलाव आयें। लोहें का प्रयोग बढ़ा, सिक्कों का प्रचलन हुआ। व्यापार-वाणिज्य का विकास हुआ तथा नगरों का उदय हुआ, जिसे ''द्वितीय-नगरीकरण'' कहा जाता है। अत: यह प्राचीन भारतीय इतिहास का परिवर्तन-काल माना जाता है। सबसे बड़ी बात तो यह कि इसी काल में ''धर्म सुधार-आंदोलन'' हुए, जिनके कारण बौद्ध व अन्य श्रमण-विचारधाराओं का उदय व उत्थान हुआ।

छठी से चौथी शताब्दी ई० पूर्व को मुख्य रूप से ''बौद्ध- काल'' कहा जाता है। इस समय के समाज पर बुद्ध और उनके विचारों का प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव अधिक था। बाद में भी साम्राटों के संरक्षण के कारण बौद्ध महत्वपूर्ण धर्म बना रहा है। बीच के कालों में बौद्धधर्म का पतन भी हुआ। लेकिन कमोवेश बौद्धधर्म के उत्थान व पहचान का क्रम पूर्व मध्य काल तक चलता रहा। पूर्व मध्य काल के बारहवीं सदी में इसका पतन हो गया। लेकिन बुद्ध और बौद्ध अनुयायियों के प्रभाव के कारण बुद्ध काल से लेकर पूर्व मध्यकाल के बीच मगध और आस-पास के क्षेत्रों में बौद्ध-विहारों की संख्या व प्रसिद्धि इतनी बढ़ गई कि इस क्षेत्र का नाम ही ''विहार'' हो गया। अत: बिहार के नामकरण का श्रेय बुद्ध और बौद्धधर्म को जाता है। इसको समझने के लिए बुद्ध-स्थलों का अध्ययन आवश्यक हैं। बुद्ध भूमियों से ही यहाँ निर्मित ''विहारों'' की अधिकता की जानकारी प्राप्त होगी।

बुद्ध के पूर्वजों की भूमि :

सिद्धार्थ गौतम का पैतृक निवास कपिलवस्तु था।[2] कपिलवस्तु कोसल के उत्तर-पूर्व में और बिहार के पश्चिमोत्तर भाग में अवस्थित था। आज यह स्थान नेपाल राज्य की तराई में है और इसका नाम तिलौरा-कोट है। लेकिन बौद्ध विद्वान बुद्धशरण हंस का मत है कि उत्तर प्रदेश का पिपरहवा ही कपिलवस्तु है। यह स्थल उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर में है। छठी शताब्दी ई० पूर्व में कपिलवस्तु का संबंध कोसल जनपद से था। ऐसा प्रतीत होता है कि कपिलवस्तु पर कोसल का आधिपत्य हो गया

था। गौतम बुद्ध के पूर्वजों के संबंध में डॉ० बी. आर. आम्बेदकर अपनी पुस्तक 'बुद्ध और उनका धम्म' में इस प्रकार लिखते है - ''कपिलवस्तु में जयसेन नाम का एक शाक्य रहता था। सिंहहनु उसका पुत्र था। सिंहहनु का विवाह कच्चाना से हुआ था। उनके पाँच पुत्र थे :- शुद्धोदन, शकलोदन, धोतोदन, सुकोदन तथा अमितोदन।[3] सिंहहनु के बड़े पुत्र शुद्धोदन ही सिद्धार्थ गौतम के पिता थे। छठी शताब्दी ई० पूर्व में शुद्धोदन कपिलवस्तु के राजा चुने गये थे।''

गौतम बुद्ध की जन्म भूमि :

राजा शुद्धोदन की रानी महामाया उन्हीं दिनों माँ बनने वाली थी। राजा ने उनको मायके ''देवदाह'' जाने की अनुमति प्रदान कर दी। देवदाह जाते समय रास्ते में ही 563 ई० पूर्व ''लुम्बिनी'' नामक स्थान पर उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया। यही बालक आगे चलकर ''बिलक्षण-बुद्ध'' हुए। इस तरह नेपाल की तराई स्थल 'लम्बिनी' ही बुद्ध की जन्म भूमि है। यहाँ सम्राट अशोक ने एक स्तम्भ लगवाया था, जो उनके जन्म स्थल का प्रमाण हैं। इस स्तम्भ पर बुद्ध के जन्म स्थान की चर्चा है।

ज्ञान-भूमि 'गया' (मगध जनपद का बोधगया) :

सिद्धार्थ गौतम का जन्म लुम्विनी और परवरिश कपिलवस्तु में हुई। लेकिन पैंतीस वर्ष की उम्र में उनको सम्यक ज्ञान उरूबेला (बोधगया) में प्राप्त हुई। यह स्थान प्राचीन मगध और आज के बिहार प्रदेश में हीं अवस्थित है। ज्ञान भूमि गया में ''ऊरूबेला'' तथा ''सेनानी ग्राम'' महत्वपूर्ण बुद्ध स्थल थे। यहाँ बुद्ध विहार थे।

सम्राट अशोक द्वारा निर्मित बोधगया विहार :-

ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त बुद्ध अनेकानेक जगहों पर उपदेश करते रहें। उन जगहों पर समकालीन परवर्तित राजाओं, सेठो और उपासकों ने विहार बनायें। ऐसे हीं एक मुख्य महाविहार था- बोधगया का विहार।

बौद्ध विषयों के विद्वान और अनेक पुस्तकों के लेखक बुद्ध शरण हंस (IAS) अपनी पुस्तक ''बुद्ध-भूमि'' में लिखते है- 'सम्राट अशोक ने 250 ई० पूर्व लुम्बिनी की यात्रा की थी। लुम्बिनी महातीर्थ की पवित्र मिट्टी को सम्राट अशोक ने हाथी पर लाद कर बुद्ध गया लायें और इसी पवित्र मिट्टी से बुद्धगया महाविहार की नींव 250 ई० पूर्व में डाली और महाविहार बनवाया।'[4]

वे आगे लिखते हैं कि बाद में बौद्धधर्म विरोधियों ने बोधगया महाविहार को नष्ट करने का भरसक प्रयास किया। लेकिन वे सफल नहीं हुए। अंततः सैकड़ों बैलगाड़ियों से फल्गु नदी के बालु लाकर महाविहार को ही ढ़क कर विशाल टीला में तबदील कर दिया। ब्रिटिश काल में भारत के गवर्नर जनरल बनकर आयें - विलियम बेंटिंग, 1829 ई० में बोधगया की खुदाई कराई। जैसे-जैसे टीले की खुदाई होती गई, सम्राट अशोक द्वारा निर्मित महाविहार हु-ब-हू निकलता गया''

बौद्ध अनुयायी अशोक महान की यह महत्वपूर्ण उपलब्धि है। बुद्ध के ज्ञान भूमि पर निर्मित यह बौद्ध विहार आज भी विश्व-तीर्थ है।

राजगृहः- मगध की आरंभिक राजधानी और बुद्ध-विहार

गौतम बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के समय राजगृह मगध राज्य की राजधानी थी। यहाँ के राजा बिम्बिसार थे। वह बुद्ध के अनुयायी थे। उन्होंने गयाशीर्ष के निकट जेठिवन में बुद्ध से दीक्षा ली थी।

श्री हवलदार त्रिपाठी सहृदय लिखते है-''मगध के उदार राजा (बिम्विसार) ने संघ के निवास के लिए अपना ''वेणुवन'' दान कर दिया और वहाँ विहार का निर्माण भी कराया।''[5]

''बिम्बिसार की दीक्षा'' भगवान बुद्ध की दूसरी धर्म-दिग्विजय थी, जिससे सम्पूर्ण मगध में उनका प्रभाव बिजली की तरह चमक उठा''

मगधराज बिम्बिसार द्वारा निर्मित वेणुवन विहार को ''वेणुवन- कलन्दकनिवाप'' भी कहा जाता था। शांति स्वरूप बौद्ध इसके संबंध में बतलाते है- ''राजगृह के इस वेणुवन कलन्दकानिवाण में भगवान बुद्ध ने अनेक सुतों का उपदेश दिया था।''[6] दीघलट्ठि-सुत, नाना तिथिय-सुत, सोपसि-सुत, आयु-सुत सहित यहाँ उन्होंने तीन दर्जन से अधिक उपदेश दिये थे। वेणुवन कलन्दकनिवाप में ही भगवान बुद्ध ने अपना चतुर्थ बर्षावास भी सम्पन्न किया था।

मगधराज बिम्विसार की तरह श्रावस्ती के राजा प्रसेनजीत भी बुद्ध अनुयायी थे। उनके पुत्र जेत ने ''राजगृह में दो पहाड़ों के बीच'' एक बौद्ध विहार बनाकर जिसे ''जेतवन-विहार'' कहा जाता था। भगवान बुद्ध को दान दिया था। मगध की राजधानी में बना यह बहुत रमणीय विहार था। आज वर्तमान में यह स्थल जेठियन के नाम से जाना जाता है। भगवान बुद्ध राजगृह से बोधगया जाने के क्रम में यहाँ एक बर्षावास चाहिए।

राजगृह में एक अन्य महत्वपूर्ण विहार था। यह राजवैध ''जीवक'' द्वारा भगवान बुद्ध को दिया गया था। जीवक भगवान बुद्ध के वैद्य थे। जब भी तथागत बीमार पड़ते थे, वह जीवक के राजगृह आम्रवन में ठहरते थे। जीवक के द्वारा दान करने के कारण इसे ''जीवकाराम-विहार'' भी कहा जाता था।

इस तरह सम्पूर्ण राजगृह की भगवान बुद्ध का कर्म स्थल था, पर विशेष रूप से यहाँ की कलन्दकनिवाप (विहार) उनका विशेष प्रिय उपदेश- स्थली थी। वहीं ''जेतवन-विहार'' अति रमणीक था, तो यहाँ की ''जीवकाराम-विहार'' उनके शिक्षा व स्वास्थ्य स्थली।

अम्बलट्ठिका (सिलाव) के विहार :

बुद्ध के समय अम्बलट्ठिका भी महत्वपूर्ण बुद्ध स्थल था। यहाँ बुद्ध अपने पाँच सौ शिष्यों के साथ रात बिताए थे। यहीं पर उन्होंने शिष्यों को ब्रह्मजाल-सुत का उपदेश दिया था।

यहाँ पर सुप्रिय नामक परिव्राजक और उसका शिष्य ब्रह्मदत्त भी बुद्ध के पीछे-पीछे आकर ठहरा। लेकिन परिव्राजक भगवान बुद्ध की निन्दा करता था। जब भिक्षुओं को इसका पता चला तो वे उसका आलोचना करने लगे। इस पर भगवान बुद्ध ने सबको ब्रह्मजाल सुत का उपदेश देकर शिक्षित किया - ''भिक्षुओं यदि कोई मेरी धम्म की या संध की निन्दा करे तो तुमलोगों को उनसे वैर नहीं करनी चाहिए। इससे मेरी, धम्म की और संघ तीनों की हानि होगी।'' यह उपदेश प्राचीन अम्बलट्ठिका (आज के सिलाव) के ''राजागारक-विहार'' में दिया गया था। प्रसिद्ध और प्रभावशाली उपदेश के बाद चारिका करते हुए भगवान बुद्ध नालंदा की ओर चल दिए थे।

नालंदा के विख्यात विहार :

बौद्ध ऐतिहासिक स्थलों में नालंदा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। बुद्ध के समय यहाँ उदंडपुर, नालक और बहुचैतयक बुद्ध- भूमि थे।

नालंदा ''बुद्ध प्रिय'' स्थल तो था हीं, यह बुद्ध के सबसे प्रमुख शिष्यों का जन्म स्थल भी था। बौद्ध-लेखक लिखते है- ''सारिपुत और मोग्गल्लान का मगध राज्य के नालंदा क्षेत्र के नालक गाँव में जन्म हुआ था।''

''धम्म सेनापति सारिपुत्र'' नामक पुस्तक में इनके संबंध में विस्तार से जानकारी मिलती है। ''धम्म सेनापति सारिपुत भगवान बुद्ध के प्रमुख शिष्यों में गिने जाते है। या यू कहना चाहिए कि वे भगवान के सबसे प्रधान शिष्य यानि- अग्रश्रावक थे।''[7] धम्म सेनापति, वे इसलिए कहे जाते है कि महाजिन, महाविजयी बुद्ध ने जिस धम्म साम्राज्य की स्थापना की, उसके सेनानी होने का भार सारिपुत ने ही निभाया था। राहुल (बुद्ध-पुत्र) सारिपुत्र के प्रथम शिष्य थे।

इन्हीं की तरह मोग्गल्लान भी बुद्ध के अग्रण्य शिष्य थे। सच्च विभंगसुत, मज्झिम-निकाय में भगवान बुद्ध कहते है- ''भिक्खुओं! सारिपुत्र और मोग्गल्लान की सेवा करो, उनके पास जाओ। भिक्खुओं! सारिपुत्र और मोग्गल्लान पंडित (विद्वान) हैं। सब्रह्मचारियों के अनुग्राहक हैं। भिक्खुओं! सारिपुत और मोग्गल्लान आर्य-सत्यों का विस्तारपूर्वक व्याख्यान कर सकते हैं।

उपरोक्त विवरण से बौद्ध धम्म में बुद्ध के बाद उन दोनों की महानता का अंदाजा लगाया जा सकता है। तिब्बत, चीन, मंगोलिया आदि महायानी बौद्ध देशों में भगवान बुद्ध के चित्र के साथ प्राय: सेनापति सारिपुत व मोग्गल्लान के चित्र भी बनाये जाते है। ऐसे बुद्ध-शिष्य के जन्म स्थान होने के कारण नालंदा या नालक के आस-पास प्रसिद्ध विहार का होना स्वभाविक है।

नालंदा के प्रावारिक-सेठ के आम्रवन में एक ''स्थाई विहार'' था, जहाँ बुद्ध अकसर आते थे। यहीं पर भगवान बुद्ध ने गृहपति-पुत्र 'केवट' को गांधारी-विद्या और चिन्तामणि-विद्या की शिक्षा दी थी।

मज्झिम निकाय के अनुसार एक बार भगवान बुद्ध चारिका करते -करते नालंदा गये और वहाँ अपने पुराने स्थान प्रावारिक आम्रवन (विहार) में ठहरे।[7] यही पर उन्होंने निग्गंठनाथपुत्र (महावीर जैन) के एक विद्वान शिष्य गृहपति उपालि को शास्त्रार्थ में पराजित किया था। इसके बाद उपालि घर आया और द्वारपाल को उसने कह दिया कि आज से बौद्धों के लिए मेरा भंडार खुला रहेगा। निग्गांठ आवें तो कह देना कि उपालि ने बौद्ध स्वीकार कर लिया है।

इस गृहपति उपालि के अलावे एक अन्य उपालि थे, जो बुद्ध के बहुत प्रिय थे। पहले वह नाई थे और नाईगिरी सेवा के काम करते थे। बुद्ध के शरण में आने पर स्वयं बुद्ध ने उन्हें ''विनय का ज्ञान'' दिया था। इस विद्या में उपालि इतने निपुण हो गये थे कि दूर-दूर के विद्वान उनसे विनय-ज्ञान सीखने आते थे। उपालि के इस उपलब्धि को देखकर भगवान बुद्ध ने उन्हें ''विनयधर उपालि'' की उपाधि प्रदान की थी। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद

राजगृह में हुए प्रथम बौद्ध संगीति में विनयधर उपालि ने ही विनयपिटक का संकलन किया था। विनय-पिटक ''बौद्धधर्म का संविधान'' है। वस्तुतः राजगृह में उपालि द्वारा कहे गए बुद्ध नियमों को एकत्र करके ही विनय-पिटक की रचना की गई थी।

नालंदा महाविहार की प्रसिद्धि :

नालंदा में प्रावारिक आम्रवन विहार के अलावे भी कई विहार बने। उन सब में नालंदा महाविहार की ख्याति जग जाहिर है। मौर्य सम्राट अशोक द्वारा कलिंग-विजय के बाद बौद्ध धम्म ग्रहण कर लिया था। बौद्ध बनने के बाद उन्होंने बुद्ध के याद में हजारों स्मारक बनवायें। इनमें बहुत से विहार थें। नालंदा महाविहार को मूलतः अशोक ने ही बनवाये थे। ऐसा प्रतीत होता है कि यह मौर्य काल तक इतना प्रसिद्ध नहीं था, जितना बाद में हुआ।

बुद्ध शरण हंस के अनुसार सम्राट अशोक ने ई० पूर्व 270 ई० में नालंदा महाविहार की स्थापना की थी। इसके बाद इसका विस्तार व विकास गुप्त सम्राटों ने किया, फिर पाल शासकों ने खुब संरक्षण दिया। गुप्त काल के बाद और हर्षकाल तक नालंदा महाविहार में देश-विदेश के हजारों छात्र पढ़ने आते थे।

इस महाविहार के संबंध में कुछ जानकारियाँ ''बौद्ध शिक्षा का स्वरूप'' नामक पुस्तक से भी मिलती है। इसके अनुसार ''प्रसिद्ध इतिहासकार लामा तारानाथ ने अपनी पुस्तक भारत में बौद्धधर्म का इतिहास (1608) में लिखा है कि नालंदा गौतम बुद्ध के प्रिय शिष्य सारिपुत की जन्म भूमि है। यहीं पर उन्होंने अस्सी हजार अर्हतों के साथ निर्वाण प्राप्त किया था। उनकी स्मृति में चैत्य भी बनवाया गया था। मौर्य काल में एक मात्र चैत्य बच गया था, जिस पर सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध विहार बनवाया गया। इस प्रकार नालंदा बौद्ध विहार के प्रथम सूत्रधार सम्राट अशोक थे।[8]

फिर गुप्तवंश के राजाओं ने इसका सृजन, संरक्षण और संबर्द्धन किया। जिन गुप्त राजाओं ने इनमें योगदान दिया था, उनकी संख्या पाँच है। इनमें महेन्द्रादित्य का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इनके बाद पाल शासकों ने भी इसको संरक्षण दिया। हर्ष और हवेनसांग के समय यहाँ दस हजार छात्र थे। इनमें बहुत से विदेशी थे। इससे देश-विदेश में इसकी प्रसिद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है। पूर्व मध्यकाल में बौद्ध विरोधी विधार्मियों ने इसको नष्ट कर दिया।

विहार (बिहाराशरीफ) के ओदन्तपुरी महाविहार :-

प्राचीन काल में ओदन्तपुरी महाविहार भी काफी प्रसिद्ध था। यह नालंदा के निकट ''विहार'' में अवस्थित था। बिहारशरीफ का ही प्राचीन नाम 'विहार' था।

बुद्ध भूमि पुस्तक के अनुसार इस महाविहार का निर्माण 268 ई० पूर्व सम्राट अशोक द्वारा कराया गया था। बाद में नालंदा की तरह यह भी प्रसिद्ध हो गया। ओदन्तपुरी महाविहार इतना सुन्दर था कि विदेशी भी इसके प्रशंसक थे। इसके सुन्दरता की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इसके नमुने पर आधारित एक ऐसा महाविहार तिब्बत में 749 ई० में बनाया गया था।

इसकी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दीपंकर आचार्य थे। वह यहीं से पढ़कर विक्रमशीला महाविहार के आचार्य और कुलपति बने। बाद में वह तिब्बत गये, जहाँ लामा-संप्रदाय के संस्थापक बने। इसे भी बौद्ध विरोधियों ने बारहवीं सदी में नष्ट कर दिया।

पाटलिपुत्र और बुद्ध :-

बुद्ध के समय मगध की आरंभिक राजधानी राजगृह थी। बाद में पाटलिपुत्र राजधानी बनी। एक बार नालंदा से चारिका करते हुए बुद्ध पाटलिपुत्र आये। उस समय बिम्बिसार के पुत्र अजातशुत्र वहाँ किला बनवा रहे थे। इसकी बनावट और सुन्दरता को देखकर भगवान बुद्ध ने कहा था कि पाटलिपुत्र आर्य-आयतन, वणिक पथ और पुटभेदन में सर्वश्रेष्ठ नगर होगा। इसे केवल आग, पानी और आपसी-फूट का ही भय रहेगा।[9] उनकी वे बातें आधुनिक युग में भी सत्य है।

पाटलिपुत्र में बुद्ध अपने संघ के साथ राज-अतिथिशाला में ठहरे हुए थे। वहाँ आकर अजातशुत्र ने उन्हें भोजन का निमंत्रण दिया। भोजनोपरान्त बुद्ध अपने संध के साथ वैशाली के लिए प्रस्थान किया। यहाँ से जिस द्वार से बुद्ध निकले वह ''गौतम-द्वार'' नाम से प्रसिद्ध हुआ और जिस घाट पर बुद्ध ने गंगा पार किया, वह ''गौतम घाट'' के नाम से विख्यात हुआ।

पाटलिपुत्र का अशोकाराम और कुक्कटाराम विहार:

सम्राट अशोक ने अनेक विहार बनवाये थे। उनके द्वारा निर्मित नालंदा और ओदन्तपुरी महाविहार गुप्तकाल, पाल और हर्षकाल में विख्यात हुआ। लेकिन मौर्यकाल में उनके द्वारा निर्मित पाटलिपुत्र का अशोकाराम और कुक्कुटाराम विहार उनसे अधिक लोकप्रिय थे। क्योंकि फाहियान जब भारत आया, तो वह नालंदा महाविहार में नहीं, पाटलिपुत्र (अशोकराम) में रहकर अध्ययन किया था। राजधानी में

होने के कारण अशोकराम अधिक प्रसिद्ध था।

फाहियान पाटलिपुत्र के संबंध में लिखता है- पाटलिपुत्र धनाढ़य नगर था। यहाँ हीनयान और महायान की शिक्षा दो विहारों में होती थी। प्रत्येक विहार में लगभग 700 बौद्धभिक्षु धर्म की शिक्षा लेते थे।

कुक्कुटाराम विहार की अपेक्षा अशोकाराम विहार अधिक विख्यात था। मिनांडर के गुरू नागसेन की शिक्षा ''अशोकाराम-विहार'' में ही हुई थी। वहीं कनिष्क काल में ''अश्वधोष'' की भी इसी विहार में शिक्षा हुई।

इस तरह प्राचीन काल में पाटलिपुत्र अपने शिक्षा-विहारों और बौद्ध प्रसार के लिए प्रसिद्ध था।

वैशाली और बुद्ध :

मगध राजतंत्र था, वहीं वैशाली प्राचीन गणतंत्र। इसकी अपनी ख्याति थी। लेकिन अजातशत्रू के शासन काल में फूट डालकर वैशाली को मगध में मिला लिया गया। वैशाली से बुद्ध का बड़ा घनिष्ठ संबंध था। सम्यक ज्ञान प्राप्ति से पहले उन्होंने यहाँ आलार कलाम और उद्दक रामपूत से शिक्षा पाई थी। बोधगया में ज्ञान प्राप्ति के बाद वह स्नेहवश वैशाली अकसर आकर शिक्षा प्रदान करने लगें। इससे कई महत्वपूर्ण कार्य यहाँ सम्पन्न भी हुए। सबसे पहले सामान्य से लेकर शासक तक उनसे दीक्षित हुए। उन्होंने वैशाली को दुर्भिक्ष से बचाया। यही नहीं, महिला ''बौद्ध-भिक्षुणी-संघ'' की स्थापना उन्होंने यहीं की। वैशाली में आम्रपाली (प्रसिद्ध नृतांगना) के जीवन को उन्होंने बदल डाला।

यहाँ बुद्ध के सबसे महत्वपूर्ण कार्य ''महिला भिक्षुणी संघ'' की स्थापना है। इस कार्य को सफल कराने में बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद का बड़ा हाथ था। इसके लिए उन्होंने ही भगवान (बुद्ध) को राजी किया था।[10] भिक्षु-संघ की दृष्टि से ''सारनाथ'' तो भिक्षुणी-संघ के गठन की दृष्टि से ''वैशाली'' सदा स्मरणीय रहेगा।

वैशाली के चैत्य एवं विहार :

वैशाली में बहुत से चैत्य और बिहार थे। ये अतिसुन्दर और रमणीय थे। बुद्ध भी इनकी प्रशंसा करते थे। एक बार अपने प्रिय शिष्य आनंद को संबोधित करते हुए बुद्ध ने कहा था- ''रमणीय है-वैशाली। रमणीय है-उसका उदयन चैत्य, रमणीय है, उसका गौतम का चैत्य, रमणीय है- उसका सप्तामक चैत्य, रमणीय है - उसका बहुपुत्रक चैत्य, रमणीय है- सारन्दद चैत्य। ये सभी चैत्य वैशाली के देव स्थान थे, जहाँ भगवान (बुद्ध) बराबर विहार करने जाया करते थे।

वैशाली में कई विहार भी थे। यहाँ के विहारों में बालुकाराम और कूटाकार-विहार बहुत प्रसिद्ध थे। बालुकारामा-विहार की चर्चा कर बुद्ध शरण हंस लिखते है - ''लिच्छवी गणराज्य में 'बालुकाराम महाविहार' बहुत ही प्रसिद्ध महाविहार था।[12] उस समय बालुकाराम विहार में सैकड़ो-हजारों भिक्षुओं के आने-जाने का तांता लगा रहता था। आज वहीं बालुकाराम अपने अतीत से अनजान है। अब यहाँ छोटा-सा बाजार, डाकघर है। पटना-वैशाली जाने के मुख्य मार्ग पर बालुकाराम गाँव स्थित है, जो बुद्ध काल में वैशाली का सबसे महातम्य वाला बुद्ध-विहार था।''

यद्यपि मौर्य काल में भी इसका महत्व बना रहा। जब सम्राट अशोक के पुत्र महेन्द्र भिक्षु बनकर सिश्रीलंका (श्रीलंका) जाने के लिए तैयार थे तो यहाँ अठारह हजार भिक्षुओं का दल उनको सुपुर्द किया गया था। वैशाली में तथागत और उनके धर्म की कितनी गहरी छाप थी, इस घटना से पता चलता है।[13]

यहाँ का दूसरा विशिष्ट विहार था- कुटागार। बुद्धत्व प्राप्ति के तीसरे वर्ष बुद्ध कुटागारशाला में ठहरे थे। उस समय वैशाली का एक तन्तुवाय यहॉ एक भवन बनाकर भगवान बुद्ध को दान में दिया था। इस कुटागारशाल में भगवान ने अपनी मौसी महाप्रजापति को, जो 500 स्त्रियों के साथ कपिलवस्तु से चलकर वैशाली आई थी, महिला संघ में सम्मिलित किया।[13] तभी से संघ में स्त्रियों का प्रवेश विहित हो गया। यह महती कार्य इसी महत्वपूर्ण ''विहार'' में हुआ था। कुटागार ''विहार'' में ही वैशाली के सिंह सेनापति, महालि, पुण्डरीक, तथा सुनक्षेत्र जैसे विशिष्ट-व्यक्तियों को बौद्धधर्म की दीक्षा दी गई थी।

वैशाली में उपरोक्त विहारों के अलावे प्रसिद्ध नर्तकी आम्रपाली के आम्रवन विहार तथा बेलुव-विहार भी थे। भगवान बुद्ध का अंतिम बर्षावास वैशाली के बेलव-ग्राम-विहार में ही हुआ था।[14]

केसरिया के स्तूप व विहार :-

बुद्ध काल में वैशाली गणराज्य के क्षेत्राधीन केसरिया था। यहाँ एक विशाल स्तुप और रमणीय विहार थे। अशोक के समय तक तो यह केसरिया केसकटा के नाम से जाना जाता था। क्योंकि बुद्ध ने यहाँ केस कटवाये थे। केसरिया का बौद्ध स्तूप विश्व में सबसे बड़ा है। 1934 के भूकंप में यह स्तूप अपनी वास्तविक ऊँचाई से थोड़ा कम हो गया, लेकिन आज भी इसकी उँचाई इंडोनेशिया के जावा

स्थित बोरोबुदुर बौद्ध स्तूप से लगभग एक फुट अधिक है।

बुद्धशरण हंस के अनुसार केसरिया के स्तुप के पास सम्राट अशोक ने विशाल बौद्ध विहार का निर्माण कराया था। इसे चीनी यात्री फाहियान ने 405 ई0 में देखा था और इसे बहुत ही रमणीक तथा महातम्य से भरपूर पाया था।

महान चीनी यात्री ह्वेनसांग 630 ई0 में केसरिया महास्तुप तथा महाविहार का दर्शन और भ्रमण किया था। इसके समय तक यह महाविहार बेहतर स्थिति में फलफूल रहा था। इसी तरह चीनी यात्री इत्सिंग ने 689 में केसरिया का भ्रमण किया था। इत्सिंग के आगमन तक केसरिया का महाविहार और बौद्ध-स्तूप अपनी पुरी गरिमा में कायम था।47 पूर्व मध्यकाल में इसे भी बौद्ध विरोधियों ने नष्ट करने का प्रयास किया। परंतु स्थानीय भिक्षुओं ने इसे सुरक्षित किया। इसके भग्नादेश आज भी दर्शनीय है।

अतएव मगध में बौद्धकाल, मौर्य-काल, कनिष्क-काल, गुप्तकाल, पाल तथा हर्ष-कालों में ''बौद्ध-विहार'' फलते, फुलते, बनते और विकसित होते रहे। यहाँ इनकी बड़ी संख्या में उपस्थिति और ख्याति के कारण ही कालांतर में मगध और आस-पास के क्षेत्र ''विहार'' कहलाने लगा था।

निष्कर्ष :

मगध जनपद के बोधगया में ज्ञान-प्राप्ति के बाद 45 वर्षों तक धूम-धूमकर शिक्षा-उपदेश देकर गौतम बुद्ध ने तत्कालीन भारत को बौद्धमय बना दिया था। इस बीच उन्होंने मगध और आस-पास के क्षेत्रों में अधिक अवधि बिताए। इनसे उन्हें बेहद लगाव था। इन सब कारणों से मगध और आस-पास (बोधगया, राजगृह, नालंदा, सिलाव, बिहार- शरीफ, पाटलिपुत्र व वैशाली) क्षेत्रों में बड़ी संख्या में विहार और महाविहार बनने लगे। विहार बनने की सिल-सिला बुद्ध के जीवन काल में ही शुरू हो गया था, जो उनके बहुत बाद तक चलता रहा। मगध-सम्राटों में बिम्बिसार व अजातशूत्र के बाद अशोक, कनिष्क, गुप्तशासक, पाल-शासक तथा हर्षवर्धन ने भी बिशिष्ट- विहार बनवायें। इन सबके प्रयास से मगध और आस पास में इतने अधिक बौद्ध विहार हो गये कि कालांतर में यहाँ आने वाले बाहरी-व्यापारियों, भ्रमणकारियों, ज्ञान-पिपासु-विदेशियों, पड़ोसियों और प्रदेशियों के नजरों में इस क्षेत्र का नाम ही ''विहार'' हो गया। निरंतर चर्चित और जन प्रचलित, ''विहार'' शब्द ही अपभ्रंश होकर आगे ''बिहार-प्रांत'' बन गया। अतएव कहा जा सकता है कि बिहार- प्रदेश का नामकरण बुद्ध और बुद्ध धर्म की देन है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. प्रसाद, कामेश्वर, भारत का इतिहास, भारती भवन प्रकाशन, पटना (2009), पृष्ठ - 24
2. सहृदय, श्री हवलदार त्रिपाठी, बौद्धधर्म और बिहार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना (1998), पृष्ठ - 3
3. आंबेदकर, डॉ० बी० आर०, बाबा साहेब, बुद्ध और उनका धम्म, बुद्धम प्रकाशन, जयपुर (2016), पृष्ठ - 27, 28
4. हंस, बुद्ध शरण, बुद्ध-भूमि, आंबेदकर प्रकाशन, पटना, (2016) पृष्ठ-27
5. सहृदय, श्री हवलदार त्रिपाठी, बौद्धधर्म और बिहार, पृष्ठ- 63
6. बौद्ध, शांति स्वरूप, कलन्दकनिवाप, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली (2005) पृष्ठ- 12
7. बौद्ध, शांति स्वरूप, धम्म-सेनापति-सारिपुत, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली (2010) पृष्ठ- 4
8. सहृद्वय, श्री हवलदार त्रिपाठी, बौद्धधर्म और बिहार पृष्ठ- 124
9. कुमार, नरेश, बौद्ध शिक्षा का स्वरूप, आंबेडकर प्रकाशन, पटना (2016) पृष्ठ- 75
10. श्री हवलदार त्रिपाठी, बौद्धधर्म और बिहार, पृष्ठ- 129
10. बौद्ध, शांतिस्वरूप, महाथेर आनंद, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली (2010), पृष्ठ- 23
11. कृष्ण, डॉ० हरे (संपादक), वैशालिका, डॉ० दामोहर प्रसाद, अभिनंदन ग्रंथ, किरण मंडल, प्रकाशन, हाजीपुर (2004) पृष्ठ- 242
12. हंस, बुद्ध शरण, बुद्ध-भूमि, आंबेदकर प्रकाशन, पटना, (2016) पृष्ठ-27
13. वैशालिका, डॉ० दामोदर प्र० अभिनंदन ग्रंथ, पृष्ठ- 234
14. श्री हवलदार त्रिपाठी, बौद्ध-धर्म और बिहार, पृष्ठ-131

❖❖❖